RNI Regn.No.- 54447/78 स्थापित: 1978 Postal Reg. No. UA/NTL- 08/ 2024-26

पिघलता हिमालय

वर्ष 41 अंक 23 हल्द्वानी सम्वत् 2082 सोमवार 10 नवम्बर 2025 एक प्रति 5 रु., वार्षिक-200 रु. आजीवन 2000 रु.

संस्थापक- स्व.आनन्द बल्लभ उप्रेती
स्व.दुर्गा सिंह मर्तोलिया,
स्व.श्रीमती कमला उप्रेती

editorpighaltahimalay@gmail.com
Website-
www.pighaltahimalay.com

सम्पादक : श्रीमती गीता उप्रेती
संरक्षक : फली सिंह दत्ताल
मंगल सिंह मर्तोलिया

उत्तराखण्ड राज्य गठन की रजत जयंती

बुजुर्गों की आँखों में तैरते वही पुराने दिन और यादें

जीवन के सौ बसन्त देख चुकी श्रीमती हरकी देवी पांगती से विशेष भेंटवार्ता

कार्यालय प्रतिनिधि

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना दिवस की खुशियां इन दिनों मनाई जा रही हैं लेकिन हमें अपने रीति-रिवाज और अपने बुजुर्गों की आँखों में तैरते सपनों का भी ध्यान रखना होगा। उनके सपने केवल सपने नहीं बल्कि अनुभवों का पिटारा हैं जो हमें सजग कर रहे हैं। साथ ही बता रहे हैं कि कितने कठिनाई भरे दिनों के बाद पृथक पर्वतीय राज्य की स्थापना हुई है और हम हैं कि अपने मूल को भूलते जा रहे हैं।

अपनी यादों के साथ जीवन के सौ बसन्त देख चुकी श्रीमती हरकी देवी पांगती से पिघलता हिमालय की विशेष भेंटवार्ता प्रस्तुत है जिसमें वह अपनी आँखों में तैरते सपने और पुरानी यादों का स्मरण करती हैं। उम्र के इस पड़ाव में हरकी देवी को साफ बोलने में दिक्कत है, बावजूद वह जिस मासूमियत से कहती हैं- 'जोहार में सब सिपाही आ गये हैं। घर-बार कैसा होगा?' इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि उन्हें अपने मुलुक की कैसी चिन्ता है। देहरादून में अपने सुपुत्र श्री नवराज पांगती के साथ रह रही हरकी देवी को दरअसल जोहार में तैनात आईटीबीपी जवानों का स्मरण होता है और जोहार से बहुत दूर देहरादून में वह बहुत ही सहज होकर कहती हैं- 'सिपाही आ गये।' इसी प्रकार की कई बातें जो भी बीच-बीच में कहती हैं जो गुदगुदाती हैं लेकिन इसके पीछे का सच है अपने मुलुक को जानो।

वयोवृद्ध श्रीमती हरकी देवी पांगती के पति स्व. बाला सिंह पांगती अपने जमाने के ग्राम प्रधान रहे हैं। इनके पुत्र पुत्रियों में डॉ. कुन्दन सिंह पांगती, स्व. दमयन्ती वृजवाल, श्रीमती चंद्रा मर्तोलिया, नवराज सिंह पांगती, कवीन्द्र सिंह पांगती और इनकी अगली पीढ़ियां हैं। हरकी देवी जब यादों के पिटारे को खोलती हैं तो सबसे पहले उन्हें बचपन याद आता है जब एकदम बाल्य अवस्था में विवाह

शेष पृष्ठ 2 पर

भारत के मीलपत्थर

इस लड़ाई में कौन जीता, कौन हारा

सूर्यकान्त बाली

महाभारत में धर्म पाण्डवों के साथ था या कौरवों के साथ, इस उलझन के बावजूद इस यथार्थ को मानना होगा कि इतिहास के राजप्रासाद में पाण्डवों को रहने को ऊपर की मंजिल मिली है, जबकि दुर्योधन को सिर्फ एक छोटा सा कमरा ही मिला है। ऐसा क्यों हुआ है? कौरवों के साथ हुए कथित अन्याय के कारण उनके प्रति कभी-कभी सहानुभूति से भरे हृदयों को कुछ बातें बतानी जरूरी हैं। पाण्डवों के पिता की मृत्यु तब हो गई , जब पाँचों भाई अभी नाबालिग थे। ऐसे बच्चों को कहानी पढ़ने वालों की ओर से करुणा का सबसे बड़ा खजाना खुद-ब-खुद मिल जाता है। पाण्डवों को वह खजाना मिला। उधर धृतराष्ट्र को राज्य मिला। पर मुकुट पहनते ही उन्होंने अपनी प्राथमिकताएँ बदल लीं। उनका सारा जोर दुर्योधन को अपना वारिस बनाने पर केन्द्रित हो गया और भाई के पुत्रों की उनकी ओर से वैसी देखभाल नहीं हुई। पितामत भीष्म न रहे होते, तो धृतराष्ट्र पाण्डु पुत्रों को तरीके से बड़ा ही नहीं होने देते। व्यास ने महाभारत में जगह-जगह पर धृतराष्ट्र के इस कलुष को उघाड़ा है। चूँकि यह सारा कलुष बरबाद करने के काम आता रहा, इसलिए इतिहास की आँखें पीड़ित, पितृहीन बालकों के लिए हमेशा अश्रुपूरित रहीं।

वरणावत के लाक्षागृह में कुन्ती और उनके पुत्रों को उनके किसी अपराध के बिना ही, बल्कि भरोसे का भ्रम पैदा कर जिन्दा जला देने का षड्यन्त्र ऐसा था, जिसके कलंक से धृतराष्ट्र और दुर्योधन नप कभी उबर सके और न उबर सकेंगे। इतिहास की सहानुभूति को पाण्डवों की ओर बहा देने वाली यह निर्णायक दुर्घटना थी। अकेला यही षड्यन्त्र सिद्ध करता है कि धृतराष्ट्र कहीं न कहीं दुर्योधन को नहीं, युधिष्ठिर को हस्तिनापुर के सिंहासन का वैध हकदार मानते थे और उनसे पिण्ड छुड़ाना उनके जीवन का एक कुत्सित प्रयोजन हमेशा के लिए बन गया। कपट भरा जुआ खेल कर पाण्डवों से इन्द्रप्रस्थ छीन कर दुर्योधन ने अपने कलंक के कफन पर हमेशा के लिए खुद ही कील गाड़ दी। दुर्योधन के कुकर्मों की चरम सीमा तब हो गई, जब उन्होंने कुरु राजसभा में द्रोपदी को निर्वस्त्र करने की नीचतापूर्ण कोशिश की। इसे संयोग कहें या पाण्डवों के धर्मात्मा होने का प्रमाण कि इस समय तक उनकी ओर से एक भी ऐसा काम नहीं हुआ, जो उन्हें खलनायक, कपटी या दुष्ट सिद्ध करता।

यह घटनाक्रम कोई कम महत्वपूर्ण नहीं है। इतना ही नहीं, बल्कि युद्ध से पहले तक भी पाण्डवों की ओर से ऐसा कोई काम नहीं हुआ, जो उनके चरित्र पर धब्बा लगाता, जबकि दुर्योधन की चादर धब्बों से भरी पड़ी थी। जुए में हारने के बाद पाण्डवों को वन-वन भटकना पड़ा, अपमानजनक अज्ञातवास के बाहर महीने बिताने पड़े।

एक बात और। भारतीय समाज राज्यू लोलुप को कभी सम्मान नहीं देता, जबकि राजसन्यासी को वह सिर माथे पर बिना लेता है। दुर्योधन लगातार राज्य संभालने की बातें कर रहे थे। पाण्डव नहीं कर रहे थे। सिर्फ कभी कभार अपना पक्ष रख देते। पाण्डव पाँच गाँवों (की जमींदारी) से सन्तुष्ट हो जाने की बातें कर रहे थे, जबकि घमण्ड से भरे दुर्योधन सुई की नोक के बराबर जमीन न देने का बड़ बोलापन दिखा रहे थे। कृष्ण शान्ति का प्रस्ताव लेकर आए थे। दुर्योधन युद्ध के नगाड़े बजा रहे थे। ऐसा पात्र कभी भी आम हिन्दुस्तानी का आदर्शपुरुष नहीं बन सकता था। आदर्शपुरुष तो पाण्डव भी नहीं बने, भले ही कृष्ण ने अर्जुन को अपना ही रूप माना- पाण्डवानां धनंजयः। अपने समय का यह सर्वश्रेष्ठ धनुर्धर भी आदर्श की मूर्ति बन कर लोगों के दिलों का राजा कभी नहीं बन पाया। आदर्शपुरुष न बनकर भी पाण्डवों ने अपने पक्ष में सहानुभूति तो अर्जित कर ही ली थी और वैसा करने में उनके अपने पुरुषार्थ की अपेक्षा धृतराष्ट्र, शकुनि, दुःशासन की चौकड़ी के षड्यन्त्र और तिरस्कार ज्यादा बड़े कारण बन गए।

पर क्या इससे पाण्डवों का पक्ष धर्म का पक्ष बन जाता है? अगर उस समय के भारत के राजाओं के वोट लिए जाएँ, तो ग्यारह अक्षौहिणी सेना जुटा लेने वाले दुर्योधन सात अक्षौहिणी सेना जुटा पाने वाले पाण्डवों पर विजयी होते नजर आते हैं। देश के महान योद्धा उस वक्त दुर्योधन के साथ थे। कंस और जरासंध का वध न हो चुका होता, तो वे भी दुर्योधन के पाले में खड़े नजर आते। पाण्डवों को मुख्य रूप से द्रुपद का ही सहारा था। उन्हें द्रौपदी के भाई धृष्टद्युम्न को अपना सेनापति बनाना पड़ा, इसी से जाहिर है कि उनके पास महान वीरों का टोटा था, जबकि दुर्योधन के पक्ष में भीष्म, द्रोण जैसे अजेय योद्धा खड़े थे। पर धृतराष्ट्र के सौ पुत्र मारे गए और पाण्डु के पाँचों पुत्र बचे रहे, इसलिए राज्य के उत्तराधिकारियों का कोई विकल्प बचा ही नहीं था। पर क्या इसी से कौरवों को हारा हुआ और पाण्डवों को जीता हुआ मान लें?

इसलिए महाभारत किसी फैसले तक

शेष पृष्ठ 3 पर

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

पिघलता हिमालय

पार्टीबाजी का घोल विकास की बुनियाद कमजोर करेगा

उत्तराखण्ड में सत्ता और विपक्ष के बीच जिस प्रकार की चाल चली जा रही है वह विकास के लिये कतई शुभ नहीं कही जा सकती। क्योंकि सत्ता सुख लेने वालों को उनका हर काम विकास दिखाई दे रहा है और विपक्ष अपनी छटपटाहट के साथ सत्ता के हर काम में खामी गिना रहा है। जनप्रतिनिधि चाहे सत्ता का हो या विपक्ष का, सबने अपने दौरे को प्रायोजित सफर बना दिया है। किसी ठेले पर खड़े होकर सामान खरीद, किसी ढाबे पर चाय नाश्ता, किसी बुजुर्ग को देख एकदम रुककर बातचीज करना, किसी खेत या कारोबारी के पास जाकर उसके साथ जुट जाना, औचक किसी के घर-आंगन में जाना...........इस सबका बकायदा फोटो-वीडियो वायरल किया जाता है। पूर्व मुख्यमंत्री हरीश रावत ने इसकी शुरुआत की, इसके बाद मुख्यमंत्री पुष्कर धामी, नेता प्रतिपक्ष यशपाल आर्या, शिक्षा मंत्री धनसिंह रावत, पूर्व मंत्री हरक सिंह रावत सहित छोटे-बड़े नेता प्रचार-प्रसार के लिये यह सब करने लगे हैं। इस पूरे तयशुदा आयोजन में विकास का असल मकसद कितना पूरा होता होगा समझा जा सकता है। असल में पर्टीबाजी का घोल विकास की बुनियाद कमजोर करेगा। होना तो यह चाहिये चाहे कोई दल की सरकार हो, जिसने जितना कार्य किया हो, उससे आगे का कार्य होना चाहिये। विकास कार्यों के लिये नया-पुराना गणित लगाने के बजाय गुणवत्ता युक्त कार्य को बढ़ावा देना जरूरी है।

हाल ही में कालाढूंगी विधानसभा क्षेत्र के पनियाली क्षेत्र की सड़क को लेकर कांग्रेस और भाजपा नेताओं के बीच जिस प्रकार की बहस हुई वह बेतरतीब बात कही जाएगी क्योंकि दोनो पक्ष एक-दूसरे पर विकास न करने का आरोप लगाते रहे और बात कांग्रेस-भाजपा होने लगी। विकास कार्यों में पार्टी का घोल न उडेला जाए। इसके लिये सबको सचेत रहना चाहिये।

देश-विदेश की प्रमुख घटनाएं

दूतावास में टैगोर की प्रतिमा का अनावरण

बीजिंग। चीन की राजधानी बीजिंग में स्थित भारतीय दूतावास में प्रसिद्ध चीनी मूर्तिकार युआन शिकुन की बनाई नोबेल पुरस्कार विजेता रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा का अनावरण किया गया। भारतीय राजदूत प्रदीप रावत ने अनावरण करते हुए कहा कि एक सदी पहले टैगोर की चीन यात्रा हमारे सभ्यतागत सम्वाद में एक उपलब्धि थी।

ब्रिटेन में नस्लीय हमले की जांच

लन्दन। ब्रिटेन के वेस्ट मिडलैंड्स इलाके में भारतीय मूल की एक युवती(20) के साथ कथित तौर पर उसकी नस्ल के कारण बलात्कार किए जाने का मामला सामने आया है। पुलिस ने 32 वर्षीय युवक को गिरफ्तार करते हुए पूरे माले की जांच शुरू कर दी है।

अर्जेंटीना में माइली की पार्टी जीती

ब्यूनस आयर्स। अर्जेन्टीना के राष्ट्रपति जेवियर माइली ने प्रमुख्य जिला मध्यावति चुनाव को अपनी पार्टी की निर्णायक जीत के साथ ही महत्वपूर्ण विश्वास मत हासिल कर लि, जिससे अमेरिका की ओर से अरबों डॉलर के समर्थन के साथ कठोर मुक्त बाजार नीतियों को आगे बढ़ाने की उनकी क्षमता मजबूत होने की सम्भावना है।

गोपनीयता उल्लंघन पर जुर्माना भरेगा मेटा

सिडनी। प्रौद्योगिकी कम्पनी मेटा ने आस्ट्रेलिया में फेसबुक उपयोगकर्ताओं की गोपनीयता उल्लंघन से सम्बन्धित मामले में 5 लाख करोड़ आस्ट्रेलियाई डॉलर (लगभग 270 करोड़ रुपये) के मुआवजा फण्ड की घोषणा की हे। यह आस्ट्रेलिया के गोपनीयता उल्लंघन के लिए अब तक का सबसे बड़ा भुगतान कार्यक्रम है।

विमान में दो किशोरों को मारा चाकू

न्यूयॉर्क। शिकागो से जर्मनी जा रही एक उड़ान में 28 वर्षीय भारतीय ने कांटे वाले चम्मच से दो किशोरों पर वार किया और एक सह-यात्री को थप्पड़ मारा। घटना के बाद उड़ान को बोस्टन लोगान अन्तर्राष्ट्रीय ले जाना पड़ा। हमलावर को पकड़ कर अदालत में पेश किया गया।

पुलिस गुजरात में सीखेगी प्रबन्धन के गुर

देहरादून। बड़े आयोजनों के दौरान पुलिस व्यवस्थाओं के प्रभावी प्रबन्धन को और अधिक सुदृढ़ बनाने के उद्देश्य से उत्तराखण्ड पुलिस के 5 अधिकारियों की टीम को नर्मदा (गुजरात) भेजा गया है।

फसक

दाज्यू, अकड़म बकड़म सब कुछ हो रहा ठैरा

रुपयों की भूख भी पत्तल तक चटवा देती है बल

दाज्यू, उत्तराखण्ड की रजत जयन्ती पर हमारे मोहल्ले में खूब धमाल हुआ। पूर्व दर्जाधारी ने पौने दो घण्टे का गदराया हुआ भाषण बोला। दाज्यू, खुशियों के मौके बनाने पर बन ही जाते हैं बल। प्रदेश की रजत जयन्ती पूर्ण होने पर दिसम्बर से बाहरी राज्यों से आने वाले वाहनों से ग्रीन सेस वसूली का फरमान जारी होने बाद मोहम्मद फुकरान खुश है। कह रहा था- 'हरियाली बचाने के लिये बहुत जरूरी कदम है।'

दाज्यू, धुंआ निकलना चाहिये चाहे जैसे हो......। लालकुआ की पेपर मिल का स्थापना दिवस पर सपना चौधरी ने आधी रात तक घमाघम डांस किया। दाज्यू, अकड़म-बकड़म सब कुछ हो रहा ठैरा। मुरादाबादी दाल का ठेला लगाने वाला जग्गू कह रहा है- 'जब तक नाक और आंख से पानी न निकल जाए, हरी मिर्च का तड़का लगाते रहना चाहिये। इसी स्वाद के लिये लोग नाले के ऊपर लगे ठेले तक आते हैं।' दाज्यू, एकदम जोर की बात कही। भूख के लिये पत्तल चाटना तो सामान्य बात है लेकिन रुपयों की भूख भी पत्तल तक चटवा देती है बल। बड़े वाले साब के आगे मंगरु और गुलाबो ने जिस प्रकार का ताल ठोका वह गजब ही था। उधर थल-पांखू सड़क पर गड्ढा भरान कार्य में घटिया गुणवत्ता से नाराज डीएम ने एई और जेई के खिलाफ कार्रवाई के निर्देश दे डाले। भगवान ही जानता है गुणवत्ता का कार्य कहाँ हो रहा होगा। लाखों-करोड़ों की सट्टम-सट्टा हो रही है बल। बिल्डिंगों में बिल्डंग का थोप्पा...। दाज्यू, खटीमा के सत्रहमील चौक क्षेत्र के गाँव की विवाहिता चार बच्चों की माँ प्रेमी के साथ जाने की जिद करने लगी। पुलिस ने बड़ी मुश्किल समझाकर घर भेजा। दाज्यू, कोई पता नहीं कि कब कहाँ धुंआ उठने लगे।

ऋषिकेश में तो अखाड़ा ही बन चुका है। एक यूट्यूबर की वीडियो पर हिन्दू शक्ति संगठन ने हंगामा कर डाला और कहा- 'ऋषिकेश और आश्रम जैसी पवित्र भूमि पर अशोभनीय वीडियो नहीं बनने देंगे।' दाज्यू, इसी प्रकार के एक दूसरे आयोजन में टेलेंट दिखाने के लिये जुटी बालिकाओं के साथ हिन्दूवादी संगठन के नेता की बहस हो गई। बालिकाओं ने दहाड़ मारी कि पहले शराब बन्द कराओ, जिन्हें छोटे कपड़े कहा जा रहा है वह बाजार से बन्द कराओ, फिल्मों में दिखाया जाने वाला सब बन्द हो। दाज्यू, तभी तो कह रहे हैं कि अकड़म-बकड़म सबकुछ हो रहा ठैरा। आगे-आगे पता नहीं क्या होने वाला है। -तुम्हारा भुली झकरुवा

बुजुर्गों की आँखों......

प्रथम पृष्ठ का शेष

की प्रथा थी। वह कहती हैं- 'नानू छी, कै फाम न्हा, नानू पुटुल बणैं.......।' (छोटी थी, दुनियादारी का पता नहीं था, सामान का छोटा का पुन्तुरा बनाया.....।) बूढ़ी अम्मा का सुलझी-उलझी बातों को सुनते रोमांच होता है। कुल जमा वह कहती हैं- 5-7 साल की अवस्था में विवाह हो गया था। कपकोट के डोटिला गाँव में भैंसखाल से बारात आई और दो दिन की पैदल यात्रा करते हुए वापस भैंसखाल पहुँची। छोटी होने के कारण मुझे घर की सीढ़ी चलने में दिक्कत होती थी। उन दिनों के रिवाज के हिसाब से आवत-जावत में मेहमानों की खूब खातिरदारी हुई।

वाकेई दुर्गमता के वह पुराने दिन कितने कठिन थे लेकिन सहज-सरल लोगों की बात-विश्वास ने समाज को हर ओर जोड़ा और सुरक्षित रखा हुआ था। हरकी देवी बताती हैं कि विवाह तो हो गया लेकिन ससुराल में भी वह अन्य बच्चों के साथ खेल में शामिल हो जाती। छोटी होने के कारण गाँव की धार चढ़ने में दिक्कत होती थी। उम्र के उत्तरार्द्ध में वह अपने पैर दिखाते हुए कहती हैं- ठण्ड में गोरी गाड़ से पानी लाने और चढ़ाई चढ़ने के नित अभ्यास ने कठोर बना दिया लेकिन इसका परिणाम बाएं पैर में आज भी थोड़ा दिक्कत है। ऐसा ही भोलापन सब बच्चों में था लेकिन बड़े बुजुर्गों का संरक्षण और सीख अपनी संस्कृति को पोषित करती थी। उम्र बढ़ने के साथ धीरे-धीरे जिम्मेदारी का अहसास होने लगा।

ज्वार-मिलम को याद करते हुए वह

कहती हैं- पानी के लिये गोरीगंगा गाड़ जाया करते थे। महिलाओं की टोली कपड़े धोने, पानी लेने के लिये जब गाड़ जाती थी कई बार हुड़क्याणियों के रसीले गायन सुनने को मिलते। ऐसा नजारा तिब्बत व्यापार के समय भी होता था। व्यापार के लिये जाते समय विदाई को जाते थे और आते समय स्वागत को जुटते थे। महिलाएं और युवतियां घरों में दन-कालीन बुनती थीं। खेतों में फाफर, आलू, सरसों की हरियाली खुशी देती थी।

हरकी देवी का विवाह जिस परिवार में हुआ था वह अपने इलाके के धनाड्य परिवारों में गिना जाता था। व्यापार से लेकर सामाजिकता का बड़ा दायरा इनका था। बाला सिंह पांगती लम्बे अर्से तक पधानी संभालते रहे। ऐसे में इधर-उधर से आने-जाने वालों का मुख्य केन्द्र इनका घर हुआ करता था। क्वीरीजिमिया, साई पोलू, मदकोट तमाम जगहों से मिलने वाले व यात्री आते थे। पांगती जी की दुकान भी थी, ऐसे में सौदे-पत्ते वालों का आना-जाना भी लगा रहता। उनका दयालुपन ऐसा था कि जिसे किसी प्रकार की परेशानी हो वह भी वहीं आता। ऐसे में दिनभर का चूल्हा-चक्का चलता रहता। घर की सयानी महिलाओं के साथ बहू हरकी देवी भी मेहमानों के लिये रसोई की तैयारी में जुटती।

इसके अलावा प्रधान पांगती जी का नियम था वह साल में एक बार पटवारी सहित खास लोगों व विशेषकर शिक्षकों को अपने घर पर खाने पर आमंत्रित करते। कम संसाधनों के उस दौर में ऊपर से दुर्गम क्षेत्र में इस प्रकार की तैयारी और विचार बहुत बड़ी बात है। इन सारी स्थितियों को समझने और जीने वाली हरकी देवी ने यही संस्कार अपने बच्चों को दिये थे। इसका प्रभाव सामाजिक ताने-बाने में दिखाई देता है। इनका परिवार जिस तनमयता के साथ सामाजिक सरोकारों से जुड़ा है, उसे देख हरकी देवी का मन खुशियों से भर जाता है और वह अपने में ही मगन रहती हैं।

उम्र के इस पड़ाव में हरकी देवी अमा अब अपने बचपन और मिलम जोहार की यादों में पूरी तरह खोई रहती हैं। पिछले बीस वर्षों से अपने मझले पुत्र नवराज पांगती के साथ रहते हुए अब भी तकली में ऊन कातते दिखाई देती हैं और अपने हमउम्र के साथियों को याद करते हुए अब भी दरकोट, मिलम, जोहार जाने की इच्छा रखती हैं।

उत्तराखण्ड की रजत जयन्ती (राज्य स्थापना दिवस 9 नवम्बर 2025) पर यही कामना है कि हमारे सभी बुजुर्ग अपनी मीठी यादों के साथ मगन रहें और नई पीढ़ी को उनकी जड़ों से जोड़ने में अपने अनुभवों का आशीर्वाद दें। प्रदेश का यह रजत जयन्ती अवसर मीठी यादों के लिये स्मरण किया जाए।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

इस लड़ाई में........

हमें नहीं पहुँचाता। उसने पाण्डवों को महात्मा और धृतराष्ट्र-दुर्योधन को कपटी तो सिद्ध कर दिया, पर युद्ध में विजय को लेकर उसने प्रश्नचिन्ह लगा दिया है। सहानुभुति उसने जरूर पाण्डवों को दिलाई है। पर सहानुभूति को विजय का पर्यायवाची कैसे मान लें?

सहानुभति चूँकि विजय का पर्यायवाची नहीं है, इसलिए विजेता पाण्डवों का राजपाट भी इतिहास का कोई उल्लेखनीय काल बन कर दर्ज नहीं हुआ है। युधिष्ठिर अपने समय के मर्यादा पुरुषोत्तम थे। वे राम के द्वापर संस्करण थे। धर्म का उन्हें गहरा ज्ञान था और जीवन को अनुशासन और मर्यादा के दायरों में रख कर जीने की कला में वे माहिर थे। पर उनके राजपाट की शैली कोई ऐसी नहीं थी कि युधिष्ठिर राज्य को रामराज्य जैसी कोई बड़ी मान्यता मिली हो। रामराज्य, जिसका कोई ब्लू प्रिंट भले ही हमें नहीं मिलता, हम भारतीयों के मन में अपनी अमिट छाप छोड़ कर बसा हुआ है। पर युधिष्ठिर राज्यकी कोई छत्रवि हमारे मन मस्तिष्क में नहीं है, बल्कि युधिष्ठिर के बार-बार समझाने के बावजूद भीम धृतराष्ट्र का अपमान करने से चूकते नहीं थे, जिसके परिणामस्वरूप धृतराष्ट्र को वनयात्रा और अन्ततः अग्निप्रवेश को विवश होना पड़ा। अर्जुन के किसी उल्लेखनीय शौर्यकर्म की गाथा हमें बाद में पढ़ने को नहीं मिलती, जबकि एक-दो बड़ी पराजयों की घटनाएँ जरूर पढ़ने को मिल जाती हैं। और तो और अर्जुन ने एक बार कृष्ण से अनुरोध किया कि वे उसे फिर से गीता सुना दों, तो जानते हैं कृष्ण ने क्या कहा? साफ मना कर दिया।

ये सब बातें बताने का उद्देश्य पाण्डवों को गरिमाहीन या श्रीहीन करना नहीं है। उद्देश्य इतना भर जताना है कि पाण्डवों के पास धर्मस्थापना का कोई ऐसा लक्ष्य या विचार नहीं था कि जिसको सुन्दर रंग प्रदान करने के लिए उन्हें राज्य पाना और सत्ता में आना जरूरी लग रहा हो। इतना ही नहीं, उनके कारण किसी धर्मराज्य की स्थापना हुई हो, ऐसा भी नहीं हुआ। राज्य वैसा ही चला जैसा जैसा दुर्योधर चला रहे थे। तुलना करें, तो दुर्योधन शायद ज्यादा कुशल शासक के रूप में उभर कर हमारे सामने आए। जाहिर है कि महाभारत का युद्ध इसलिए लड़ा गया कि फैसला करना था कि हस्तिनापुर का असली वारिस कौन है, दुर्योधन या युधिष्ठिर। घटनाओं और रणनीति ने फैसला युधिष्ठिर के पक्ष में दिया। कौरव इतिहास के खलनायक बन गए और धर्मराज युधिष्ठिर की जीन ने धर्म का कोटा पाण्डवों के पक्ष में झुका दिया।

इसलिए पाण्डवों की जीत को भी जीत न मानने वाले इतिहास और वर्तमान में कम नहीं रहे हैं। पर कौरवों को पिछले पाँच हजार साल से अगर सहानुभूति की क्षीण धारा से निरन्तर स्नान का अवसर मिला है, तो जाहिर है कि आज तक एक सर्वसम्मत फैसला नहीं हो पाया कि 18 दिन के महाभारत युद्ध में कौन जीता और कौन हारा? अब पता नहीं खूबी किसमें है, फैसला हो जाने में या निरन्तर बहस में?

(साभार नवभारत टाइम्स)

हरि प्रदर्शनी

हरिसिंह ज्यू का स्मरण करते हुए उत्साह दोगुना

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

मुनस्यारी। हरि स्मारक समिति द्वारा मल्ला दुम्मर में इस बार भी हरि प्रदर्शनी का भव्य आयोजन किया गया। परम्परागत रूप से आयोजित होने वाली इस प्रदर्शनी का जो स्वरूप निर्धारित था, उसी अनुसार नितन्तर होना क्षेत्रवासियों की प्रतिबद्धता के साथ उनकी ईमानदारी के दर्शन कराता है। हरिसिंह ज्यू का स्मरण करते हुए क्षेत्र का उत्साह दोगुना हो गया है क्योंकि जिस प्रकार से स्थानीय कलाकारों, उद्यमियों ने तीन दिन तक चलने वाले आयोजन में प्रतिभाग किया वह इसकी मूल भावनाओं को प्रदर्शित करने वाला है।

विगत 72 वर्षों यानी वर्ष 1953 से लगातार किया जा रहा है यह आयोजन इस बार भी क्षेत्र के कृषकों द्वारा उत्पादित कृषि एवं बागवानी उत्पाद, कुटीर उद्योग और लघु काश्तकारों एवं कलाकारों द्वारा बनाये गये उत्पादों के साथ-साथ स्थानीय एवं पारम्परिक गीतों, नाट्य कला, वेशभूषा में अपनी संस्कृति को दर्शन करवाने वाला था। प्रभातफेरी, ध्वजारोहण के साथ आरम्भ हुई प्रदर्शनी में नरसिंह जंगपांगी स्मृति बॉलीबाल प्रतियोगिता व स्वास्थ्य शिविर का आयोजन भी हुआ। मल्ला जोहार विकास समिति की संगोष्ठी के आलावा प्रदर्शनी व सांस्कृतिक प्रतियोगिता देखने को मिली। बच्चों की पेंटिंग, निबन्ध प्रश्नोत्तरी, प्रतियोगिता के अलावा महिला मंगल दलों का ढुस्का प्रदर्शन मनमोहक था। कार्यक्रम में क्षेत्रवासियों का उत्साह यूं भी दुगणित हो जाता है क्योंकि बाहर से आने वाले इष्ट-मित्र व माइग्रेशन में आने वाले परिजनों का जमावड़ा होता है। आयोजन से जुड़ी अनगिनत यादों के साथ बुजुर्ग बतियाते हैं।

(विस्तृत रिपोर्ट पिहि के अगले अंक में)

जोहार महोत्सव

शौका संस्कृति : 'भाबर' में 'सहेज' का प्रयास

पिघलता हिमालय प्रतिनिधि

हल्द्वानी। जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी द्वारा भाबर के हल्द्वानी शहर में किये जा रहे जोहार महोत्सव में फिर से जोश दिखाई दिया। पन्द्रह साल पूर्व शुरू किये गये आयोजन ने जिस स्वरूप को ओढ़ा है उससे साफ है कि शौका संस्कृति 'भाबर' में 'सहेज' का यह प्रयास है। इसकी सराहना होनी चाहिये क्योंकि यत्र तत्र रहने वाले सीमान्तवासी बड़ी संख्या में हल्द्वानी बस चुके हैं लेकिन उनकी मूल संस्कृति उन्हें अपनों से जोड़े रहती है। आने वाली पीढ़ी को भी अपनी धारा से जुड़े रहने का आह्वान करते हुए इस प्रकार का आयोजन सफल कहा जाएगा। ऐसे समय में जब तरह-तरह के आयोजनों से मैदान से लेकर पहाड़ तक यह गफलत फैल चुकी है कि आँखिर कौन सा जो आयोजन हो रहा है, जोहार महोत्सव का निखार नव उत्साहित युवाओं को प्रोत्साहित कर रहा है।

इस बार के आयोजन में मुख्य आकर्षण जोहारी शौकाओं की परम्परिक परिधान एवं ढोल-दमाऊ के साथ झांकी, झोड़ा प्रतियोगिता, पिथौरागढ़ छोलिया दल का नृत्य, जोहारी व्यंजन प्रतियोगिता, मंचीय कलाकारों की प्रस्तुति रही। सबसे आकर्षित करने वाला कार्य जो इस बार देखने को मिला वह था- जोहार शौका केन्दीय समिति के द्वारा मुनस्यारी में हस्तकला व हस्तशिल्प से निर्मित वस्तुओं तथा लेखकों की पुस्तक व मिनी म्यूजियम का स्टॉल प्रदर्शन। तीन दिवसीय आयोजन को लेकर जोहार सांस्कृतिक एवं वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष भूपेन्द्र सिंह पांगती, सचिव धीरेन्द्र सिंह पांगती सहित पूरी टीम लगाजार जुटी है।

(कला समीक्षा पिहि के अगले अंक में)

नैनीताल जिला पंचायत चुनाव बवाल पर कोर्ट असन्तुष्ट, रिपोर्ट देने के निर्देश

नैनीताल। हाईकोर्ट नैनीताल ने नैनीताल जिला पंचायत अध्यक्ष व उपाध्यक्ष पदों के लिये मतदान के दिन 14 अगस्त को बबाल, सदस्यों के कथित अपहरण, मतगणना में एक मतपत्र पर ओवरराइटिंग और अध्यक्ष का चुनाव पुनः कराने को लेकर दायर जनहित याचिकाओं पर सुनवाई करते हुए लिफाफा बन्द रिपोर्ट देखी और असन्तुष्ट दिखाई दिया। कोर्ट ने जाँच अधिकारी से सवाल किया कि बबाल वाले दिन वीडियों में हथियार के साथ दिख रहे व्यक्ति पर क्या एक्शन हुआ। सीबीसीआइडी से 28 नवम्बर तक फिर रिपोर्ट देने को कहा है।

संयुक्त समिति ने किया समारोह बहिष्कार

रामनगर। चिह्निन्हत राज्य आन्दोलनकारी संयुक्त समिति ने राज्य स्थापना दिवस पर होने वाले रजत जयन्ती समारोह का बहिष्कार किया। समिति के केन्द्रीय मुख्य संरक्षक धीरेन्द्र प्रताप का कहना है कि राज्य सरकार आन्दोलनकारियों की मांगों के प्रति गम्भीर नहीं हे। कहा आरक्षण को लेकर सरकार की बेरुखी कायम है। आन्दोलनकारियों की पेंशन व दूसरे सवालों पर सरकार सोई हुई है। राज्य में प्रतियोगी परीक्षाओं में लगातार गड़बड़ियां हो रही है।

ज्योतिष की बातें- 254

6 नवम्बर 2025 को (स्थानभेद से) मंगल वृश्चिक राशि में पश्चिम दिशा में अस्त हो चुका है अतः अगले चार मास मंगल से प्राप्त होने वाली शुभाशुभ फलों में न्यूनता प्रतीत होगी।

10 नवम्बर 2025 को बुध वृश्चिक राशि में वक्री हो जाएगा और 20 दिनों तक वक्री रहेगा। इसी मध्य 12 दिनों के लिए बुध अस्त भी रहेगा। बुध के वक्री प्रभाव शनि आदि ग्रहों के समान तीक्ष्ण प्रकृति का नहीं होता है इसलिए विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए।

11 नवम्बर 2025 को गुरु वक्री हो जाएगा अतः अगले चार माह तक गुरु से प्राप्त होने वाली शुभाशुभ फलों में प्रबलवा प्रतीत होगी।

16 नवम्बर 2025 को सूर्य मित्रराशि वृश्चिक में प्रवेश करेगा। वहाँ पर कुछ दिन मित्रग्रह मंगल से युति भी रहेगी अतः सूर्य अत्यन्त बली रहेगा। अगले एक माह तक सूर्य स्वास्थ्य, सफलता, यश आदि अपने कारक विषयों में कन्या, मिथुन, कुम्भ व मकर राशि के जातकों को अत्यन्त शुभ फल प्रदान करेगा। श्री कालभैरवाष्टमी- मार्गशीर्ष कृष्णपक्ष की अष्टमी मध्याह्न से प्रदोष तक रहने वाली तिथि में अथवा प्रदोष व्यापिनी अष्टमी तिथि में भैरव जयन्ती का पर्व मनाया जाता है। तदनुसार बुधवार 12 नवम्बर 2025 को भैरव जयन्ती का पर्व मनाया जाएगा। जिनकी जन्मकुण्डली में केतु अशुभ है अथवा केतु की महादशा या अन्तर्दशा चल रही है उन्हें यह पर्व अवश्य ही मनाना चाहिए और श्री कालभैरवाष्टकम् का श्रद्धापूर्वक पाठ करना चाहिए।

शुभं भवतु !!

-ओंकार नाथ कोष्टा

ज्योतिर्विद् एवं आयुर्विद्

सम्यक् विचार- 144

समय सुधरता भी है

लोग अक्सर कहते हैं कि बहुत खराब जमाना आ गया, अब आगे क्या होगा, घोर कलयुग है। लेकिन मेरा विचार है समय बदलता भी है। आज से 30-40 साल पहले वनस्पति घी डालडा का बहुत प्रचलन था। जब लोगों में जागरूकता आई, उससे होने वाले नुकसानों की जानकारी लोगों को मिली तो अब लोगों ने वनस्पति घी खाना पूर्णतः बन्द कर दिया है। अब सभी लोग देसी घी का ही प्रयोग करते हैं। पहले सभी लोग भैंस के घी दूध आदि का ही उपयोग करते थे। जब गाय की दूध की मांग बढ़ी तो लोगों ने जर्सी गाय को पालना शुरू कर दिया। दूध, दही, घी सब कुछ जसह्र गाय का बाजार में उपलब्ध है। जर्सी गाय भी भैंस के समान ही है, ऐसी जानकारी लोगों को मिलने के बाद अब लोगों में देसी गाय के घी दूध की मांग प्रारम्भ हो गई है । आगे चलकर ऐसा ही होगा, देसी गायों को पालना प्रारम्भ हो जाएगा।

एक सर्वे के अनुसार पिछले दो साल में मोबाइल पर सोशल मीडिया, यूट्यूब, व्हाट्सएप, फेसबुक का उपयोग घटा है अर्थात् लोगों में इसके विरुद्ध जागरूकता आ रही है। धीरे-धीरे यह सोशल मीडिया भी बन्द हो जाएगा। देसी किस्म की सब्जियों फलों और बिना यूरिया के उत्पन्न सब्जी फलों की मांग अब बाजार में बढ़ने लगी है । धीरे-धीरे हाइब्रिड नस्लों और यूरिया का उपयोग एक दिन अवश्य समाप्त होगा। आज जो लोग प्रौढ़ावस्था और वृद्धावस्था में विवाह कर रहे हैं वे लोग अपने बच्चों का विवाह सही समय पर करेंगे। नौकरी के लिए जो भाग-दौड़ इस समय दिख रही है वह धीरे-धीरे कम हो जाएगी। अति के बाद अवश्य ही इति होती है। जमाने में परिवर्तन वास्तव में एक पीढ़ी के बाद ही आता है। इसलिए समय सुधरेगा ऐसी आशा अवश्य रखनी चाहिए।

-ओंकार नाथ कोष्टा

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

आठगांव शिलिंग महोत्सव

पिथौरागढ़। जिला मुख्यालय के निकटवर्ती आठगांव शिलिंग में तीन दिवसीय महोत्सव का जोरदार आयोजन किया गया। आठ साल बाद फिर से शुरू इस आयोजन में उद्घाटन विधायक मयूख महर ने किया। डाबरी गाँव के रा.कन्या पूर्व मा.विद्यालय के मैदान में हुए आयोजन में स्थानीय स्कूलों के सांस्कृतिक कार्यक्रम देखने को मिले। मुख्य संयोजक वीरेन्द्र सिंह वल्दिया सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

खरही मेले में देव डोले में उमड़े लोग

लोहाघाट। पाटी ब्लाक के दूरस्थ ग्राम पंचायत खरही में पौराणिक मेले का आयोजन हुआ। इस अवसर पर बैजगांव शिव मन्दिर से देव डोला निकाला गया जिसमें बड़ी संख्या में लो उमड़े। शिव पूजन के लिये डोला लधौनधुरा शिव मन्दिर ले जाया गया। फिर खरही के नाखुड़ा के में लाया गया। अगले एक वर्ष तक यहाँ डोले की नित्य पूजा होगी।

लधौनधुरा का वैद्यनाथ मेला

चम्पावत। चन्द राजाओं के समय से जारी पौराणिक लधौनधुरा का वैद्यनाथ मेला धूमधाम से मनाया गया। दो दिवसीय मेले का जिला पंचायत सदस्य मुकेश सिंह महराना ने शुभारम्भ किया। मान्यताओं के अनुसार लोगों ने मेले में पूजा अर्चना की।

अल्मोड़ा में जय गोल्ज्यू महोत्सव

अल्मोड़ा। मल्ला महल में जय गोल्ज्यू महोत्सव की धूम मची। ड्योढ़ी पोखर से मल्ला महल तक सांस्कृतिक शोभायात्रा के साथ शुरू हुए आयोजन में उत्तराखण्ड के साथ-साथ देश के विभिन्न राज्यों से आए कलाकारों ने अपीन सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दीं। इसके अलावा नृत्य गीत प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

मल्लिकार्जुन महादेव अस्कोट में मेला

अस्कोट। बैकुण्ठ चतुर्दशी को मल्लिकार्जुन महादेव में परम्परागत तरीके से मेले का आयोजन किया गया। इस मौके पर बगड़ीहाट, ड्योड़ा, सांवली, सेरा, जमतड़ी, अस्कोट के अलावा नेपाल से ढोल नगाड़ों के साथ यात्रा पहुंची। मन्दिर सेवा समिति के सचिव नारायण दत्त पन्त के साथ ही कमेटी ने यात्रियों का स्वागत किया।

सिडकुल में हटाया गया अतिक्रमण

सितारगंज। औद्योगिक पार्क में सिडकुल, राजस्व व पुसिल प्रशासन ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए 25 से अधिक अतिक्रमणों को जेसबी से हटाया गया। इस दौरान प्रशासन को काफी विरोध का सामना करना पड़ा। पार्क क्षेत्र के मुख्य मार्गों व ग्रीन वेल्ट क्षेत्र में लम्बे समय से व्यावसायिक प्रतिष्ठान चलाये जा रहे थे इससे आवागमन बाधित हो रहा था।

14 नवम्बर से काली-गोरी संगम पर जौलजीबी मेले की धूम मचेगी

जौलजीवी। भारत-नेपाल की साझा सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक जौलजीबी मेला 14 नवम्बर से आरम्भ हो जाएगा। काली-गोरी नदी के संगम पर लगने वाले इस दस दिवसीय मेले की तैयारियां हो चुकी हैं। व्यापार संघ अध्यक्ष धीरु धर्मशक्तू ने सभी से इस परम्परागत मेले में स्वच्छता पर विशेष ध्यान देने की अपील की है। मेले के लिये स्थानीय व्यवसाइयों के अलावा बाहर से काफी व्यापारी जौलजीवी पहुंच चुके हैं। सीमा पार नेपाल में भी मेले की तैयारियों को लेकर जोर है।

बताते चलें कि इस ऐतिहासिक मेले की शुरुआत अस्कोट के पाल राजा गजेन्द्र बहादुर पाल ने सन् 1914 में की थी। उस समय इस दुर्गम क्षेत्र में लोगों को आवश्यक वस्तुओं के लिये अल्मोड़ा या टनकपुर तक पैदल जाना पड़ता है। जनसुविधा के लिये जौलजीवी को केन्द्र मानकर यह मेला आयोजित किया गया जिसमें आगरा, मथुरा, दिल्ली से तक व्यापारी आने लगे। साथ ही नेपाल के अलावा तिब्बत से तक व्यापारियों की आवत ने इसे गरिमा दी।

रेलवे विभाग की टीम विरोध से वापस

किच्छा। रेलवे प्रशासन की अतिक्रमण हटाओ टीम भारी विरोध के बाद वापस हो गई। टीम जेसीबी के साथ नगर के हल्द्वानी मार्ग पर सड़क किनारे वर्षों से बसे लोगों को हटाने का अभियान शुरू करने वाली थी कि विधायक तिलकराज बेहड़ ने मौके पर पहुंचकर कार्रवाई का विरोध किया। अतिक्रमण की जद में आए दर्जनों पीड़ितों के साथ एसडीएम कार्यालय पहुंचे विधायक ने उप जिला अधिकारी गौरव पाण्डे से वार्ता करते हुए अतिक्रमण हटाने से पूर्व रेलवे विभाग द्वारा अतिक्रमण एवं सीमांकन को चिन्हित करने तथा कार्रवाई से पूर्व नोटिस जारी करने की मांग की। उन्होंने कहा कि आपसी सहमति तथा अतिक्रमण चिन्हीकरण करने एवं नोटिस जारी होने से पूर्व किसी कीमत पर रेलवे विभाग की कार्रवाई नहीं होने दी जाएगी।

बताया जा रहा है कि रेलवे विभाग के ठेकेदार जावेद के नेतृत्व में जेसीबी मशीन लेकर टीम ने काली मन्दिर के निकट रेलवे पटरी किनारे रेलवे की भूमि पर किए गए अतिक्रमण हटाने की कार्रवाई शुरू कर दी थी। अचानक हुई कार्रवाई का विरोध के साथ्न ही लोगों ने विधायक को भी अवगत कराया।

बौराणी कौतिक में ऐतिहासिक मशाल

गंगोलीहाट। तहसील गणाई गंगोली के अन्तर्गत प्रसिद्ध बौराणी कौतिक में ऐतिहासिक मशाल की झांकी निकाली गई। तीस फीट लम्बी मशाल के साथ ग्रामीणों ने मन्दिर परिक्रमा की। अपने परम्परागत स्वरूप के रूप में अब यही मुख्य बात इस मेले में रह गई। बताते चलें कि बौराणी का कौतिक इतिहास में बहुत चर्चित है। यहाँ होने वाले जुएं लिये देशभर से खिलाड़ी जुटते थे। कुथली बोरा नाम की बेहत प्राचीन संस्कृति ने इसका जमजमाव किया। भांग के रेसों से बनने वाली सामग्री- रस्सी, कुथले, पत्थर से बनने वाले चक्का-चक्की इत्यादि खरीद के लिये लोग जुटते थे और लोक कलाकारों की मोहक प्रस्तुतियां होती थी। समय के साथ वह सब अब नहीं है। युवाओं ने जुए के खेल को बन्द करवाने के अलावा सांस्कृतिक आयोजन पर जोर दिया। बढ़ती उच्छृंखलताओं को देखते हुए यह जरूरी भी था। बौराणी कौतिक का लोक व्यवहार आज भी लुभाता है और व्यापारियों की खुशी के अलावा होने वाले आयोजन ने समाज को जोड़ा है।

जौनसार की पंचायत का फैसला, तीन आभूषण ही पहनेंगे

देहरादून। जिले में यमुना और टोंस नदी के बीच स्थित जौनसार अनुसूचित जनजाति क्षेत्र के दो ग्रामों की पंचायत ने निर्णय किया है कि महिलाएं अब केपल तील आभूषण पहन कर ही विवाह समारोहों में शामिल होंगी ताकि समाज में दिखावे की प्रवृत्ति के साथ ही घरेलू कलह पर भी अंकुश लगाया जा सके। कंधाड़ और इंदरानी गाँवों की संयुक्त पंचायत ने ज्यादा आभूषण पहन कर शादी समारोह में शामिल होने की होड़ से सामाजिक असमानता को बढ़ावा मिलने के दृष्टिगत यह निर्णय लिया है। निर्णय के अनुसार अब महिलाएं विवाह समारोह में केवल नाक में लौंग, कानों में बुंदे और गले में मंगलसूत्र पहनकर ही शामिल होंगी। यह फैसला न मानने वालों पर पचास हजार रुपये का जुर्माना लगाया जाएगा। कंधाड़ गाँव के सबसे प्रमुख व्यक्ति (स्याणा) अर्जुन सिंह कहते हैं कि सोने के महंगा होने के कारण कई महिलाएं दूसरों को देखकर सोना खरीदने का दबाव बनाती हैं। इससे परिवार में झगड़े और आर्थिक तनाव जैसी स्थितियाँ पैदा होती हैं। हमारा उद्देश्य असमानता कम करना है। पंचायत के इस फैसले का महिलाओं ने भी स्वागत किया है।

इस बीच समानता का सवाल उठाते हुए यह भी कहा जा रहा है कि पुरुषों द्वारा होने वली ब्रांडेड शराबखोरी पर भी रोक लगे। माना जा रहा है कि शराब पर रोक के लिये भी पंचायत में जल्द फैसला हो सकता है। उठे सवालों के बाद कहा जा रहा है कि चरणबद्ध तरीके से शराब व अन्य फिलूल खर्चों पर रोक लगाने पर विचार किया जाएगा।

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती अवसर पर शुभकामनाओं के साथ-

जंगपांगी जनरल स्टोर

मदकोट रोड, दरांती मनुस्यारी

(सीमेन्ट, पेण्ट, हार्डवेयर सामग्री के लिये सुलभ स्थान मो.-

9760342346

चन्द्रकुंवर बर्त्वाल पर्यटन विकास मेला

पोखरी। चन्द्रकुंवर बर्त्वाल पर्यटन किसान विकास मेले में लोक कलाकारों ने समा बांधा। मेला अध्यक्ष सोहन लाल ने क्षेत्र वासियों को सहयोग के लिये धन्यवाद देते हुए कहा कि सबके सहयोग से यह मेला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंचा। इस मौके पर अतिथियों व कलाकारों को सम्मानित किया गया।

पत्रकार जगमोहन रौतेला सम्मानित

हल्द्वानी। कुणाल बुक्स दिल्ली की ओर से जनपक्षीय पत्रकारिता के लिए वरिष्ठ पत्रकार जगमोहन रौतेला को सम्मानित किया गया। प्रेमपुर लोशाझी में आयोजित कार्यक्रम में उन्हें दून विवि के डॉ.हरीश चन्द्र अण्डोला और सांख्यिकी विभाग के सेनि. अधिकारी हरीश सिंह पाल ने सम्मानित किया। इस अवसर पर बीज बिखेरो अभियान से जुड़ी हर्षिता रौतेला बुलबुल, सुरेश चन्द्र अण्डोला, कृपाल सिंह मेहरा, ध्रुव अण्डोला सहित कई लोग मौजूद थे।

परिक्रमा

टिहरी-पौड़ी को जोड़ने वाला पुल

देवप्रयाग। टिहरी व पौड़ी जिले को जोड़ने वाले बहुप्रतीक्षित अलकनन्दा पैदल पुर का सीएम की ओर से विधायक विनोद कण्डारी ने शिलान्यास किया। 583.58 लाख रुपये लागत के सिंगल लेन स्टील ट्रस का यह पुल 84 मीटर स्पान का होगा। यह पुल टिहरी राजशाही में बने पुराने अलकनन्दा पैदल पुल का स्थान लेगा जो जर्जर स्थिति में पहुंच चुका है।

लक्ष्मणसिंह डांगी को सामाजिक सम्मान

बेरीनाग। रानीखेत में आयोजित पूर्व सैनिक सम्मेलन के दौरान नागा रेजिमेंट द्वारा बेरीनाग के पूर्व सैनिक संगठन के अध्यक्ष कैप्टन लक्ष्मण सिंह डांगी को प्रशस्ति पत्र और मेडल प्रदान कर सम्मानित किया गया। लेफ्टिनेंट जनरल तिवारी ने कैप्टन डांगी के सामाजिक योगदान की सराहना करते हुए कहा कि उनके कार्य पूर्व सैनिक समुदाय और समाज दोनों के लिए प्रेरणाप्रोत हैं। बताते चलें कि कैप्टन डांगी पिछले एक दशक से पूर्व सैनिक कल्याण व सामाजिक कार्यों के लिये सक्रिय हैं।

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती अवसर पर शुभकामनाओं के साथ-

राहुल सिंह जंगपांगी

मुधवन इनक्लेव फेस-2, गैस गोदाम रोड, कुसुमखेड़ा, हल्द्वानी

उत्तराखण्ड राज्य स्थापना के रजत जयन्ती अवसर पर शुभकामनाओं के साथ-

श्रीराम सिंह धर्मशक्तू

अध्यक्ष

मल्ला जोहार विकास समिति

बूंगा, मुनस्यारी

होटल माँ नन्दादेवी एण्ड बारातघर

मो.न. 8958525979, 9411134775

नानासेम, मुनस्यारी

गणेश सिंह मर्तोलिया एण्ड सन्स

फोन सम्पर्क- 05961-222236

हार्डवेयर, बिल्डिंग मैटीरियल, जनरल आर्डर सप्लायर्स

रजत जयन्ती पर दून पुस्तकालय में विविध कार्यक्रम

देहरादून। दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र की ओर से राज्य स्थापना दिवस पर रजत जयन्ती समारोह के अन्तर्गत विविध साहित्यिक कार्यक्रम आयोजित किए गये। इसमें उत्तराखण्ड टैलेंट शो प्रतियोगिता, कठपुतली कार्यशाला, बौद्धिक चर्चा के कार्यक्रम, लोक संगीत और भाषा व साहित्य पर केन्द्रित कार्यक्रम थे। इस अवसर पर शोध केन्द्र के अध्यक्ष प्रो. बी.के.जोशी, मानद निदेशक एन.रविशंकर और कार्यक्रम के मुख्य संयोजक एन. एस. नपलच्याल, संयोजक अनिल रतूड़ी, पूर्व पुलिस महानिदेशक उत्तराखण्ड व जय राज पूर्व मुख्य वन संरक्षक सहित विद्वतजन उपस्थित थे।

सरकारी आयोजनों की धूम मची

देहरादून। उत्तराखण्ड सरकार की ओर से रजत जयन्ती के अवसर पर प्रदेश भर में धूम मची हुई है। सांस्कृतिक जलसों में आमंत्रित कलाकारों को मौका दिया गया। सरकारी निर्देशों के क्रम में कार्यालयों में सजावट व स्वच्छता अभियान चलाए गए। अवसर को खास बनाने के लिये शासन-प्रशासन की ओर से सभी जिलों में भव्य आयोजनों का दौर जारी है।

प्रतियोगिताएं भी

उच्चशिक्षा विभाग में गीत, संगीत, क्विज, पोस्टर तमाम तरह की प्रतियोगिताओं का आयोजन देखने को मिला। कालेज व विश्वविद्यालयों में इनकी प्रस्तुति हुई।

न तेरा न मेरा Thats

APNA GHAR चौकोड़ी

मो.- 9458920379, 6396098804

HOTEL RESTRO BANQUET

YOGA MEDITATION || LIVE MUSIC || HOMELY FOOD || BIRTHDAY WEDDING

Near by- (माँ कोटगाड़ी, नौलिंग देव, पातालभुवनेश्वर)

पितृछाया- स्वतंत्रता संग्राम सेनानी स्व. जोगासिंह मर्तोलिया

Enjoy Beauty of Himalaya at

MARTOLIA LODGE

Family Guest House- Sarmoly, Munsiyari

A Home Away From Home & Home Stay

Phone: (05961) 222287

Hotel

Bala Paradise

Tiksain, Munsiari

Ph. 05961222237, 9412951678

धमोत

होम स्टे

धरमघर/चकोड़ी

(एडवेंचर जोन, ट्रेकिंग, माउंटेन वाइकिंग, स्थानीय व्यंजन)

www.mountainheights.in

मो. 9760007148

घर से बाहर अपनों का साथ

होटल लक्ष्य इन

मदकोट

नरेन्द्र सिंह रावत

सम्पर्क 7351285555

Hayat Paradise

Bus Station

Munsiari

Ph. 09411556700, 9997733070

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक श्रीमती गीता उप्रेती द्वारा पिघलता हिमालय, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी (नैनीताल) उत्तराखण्ड से प्रकाशित एवं शक्ति प्रेस, जे०के०पुरम्, सेक्टर डी, छोटी मुखानी, हल्द्वानी(नैनीताल) से मुद्रित।

सम्पादकः श्रीमती गीता उप्रेती फोन/मोबाइल 9458961490, 9411770280, 9411301014,

editorpighaltahimalay@gmail.com

Website- www.pighaltahimalay.com

Print to PDF without this message by purchasing novaPDF (http://www.novapdf.com/)